भारत: भाषा एवं धर्म

(Indai: Language and Relgion)

भाषा अभिव्यक्ति का सर्वोत्तम साधन है। मानव सर्वाधिक विकसित एवं भावनाशील प्राणी है। वह समाज में अन्य व्यक्तियों के साथ रहकर अपने विचारों का आदान-प्रदान करता है। भाषा के उद्गम से पूर्व मानव अपनी भावाभिव्यक्ति संकेतों से करता था। मानव की भाँति पशु-पक्षियों एवं कीट-पतंगों की भी अपनी भाषा होगी।

भाषा का अर्थ बोलना है क्योंकि इसका मुख्य प्रयोग बोलकर ही किया जाता है किन्तु दूरस्थ व्यक्ति को विचार लिखकर ही व्यक्त किये जाते हैं। इस प्रकार भाषा में बोलने एवं लिखने दोनों को सम्मिलित किया जाता है।

पतंजलि के अनुसार, "**जिस व्यापार में वाणी द्वारा वर्ण व्यक्त होते हैं, वह व्यक्त वाक् अर्थात् भाषा है।**"

भाषा वह शब्दमय माध्यम है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर या लिखकर अपने विचार दूसरों पर सरलता, स्पष्टता, विस्तार तथा पूर्णता से व्यक्त कर सकता है।

भारत में 826 भाषाएँ (बोलियाँ) बोली जाती हैं। इनमें से 720 ऐसी हैं जो प्रत्येक 1 लाख व्यक्तियों से भी कम द्वारा व्यवहृत की जाती हैं तथा 63 अभारतीय भाषाएँ हैं। भारतीय संविधान में मान्य 22 भाषाएँ लगभग 93% लोगों द्वारा बोली जाती हैं।

मोटेतौर पर भारत की भाषाओं को चार खण्डों (भाषा परिवारों) में बाँटा जा सकता है—

(1) **भारतीय आर्य भाषाएँ** (Indo-Aryan)—ये अधिकतर सम्पूर्ण भारत में बोली जाती हैं। ये सभी प्राकृत भाषा से मिलती हैं। प्रमुख आधुनिक भाषाएँ निम्नलिखित हैं—

(i) **हिन्दी** विशेषकर उत्तर प्रदेश, पूर्वी राजस्थान, बिहार, झारखण्ड, हरियाणा, दिल्ली और मध्य प्रदेश में प्रचलित है। बोलने वालों की दृष्टि से हिन्दी का विश्व में चौथा स्थान है। (ii) **पंजाबी** भाषा पंजाब में, (iii) **बंगाली** भाषा पश्चिम बंगाल, असोम, त्रिपुरा, मणिपुर में, (iv) **ओडिया** भाषा ओडिशा में, (v) **मराठी** भाषा दक्षिण के उत्तर-पश्चिमी भाग, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में, (vi) **गुजराती** भाषा उत्तरी गुजरात, दक्षिण-पूर्वी राजस्थान में, (vii) **बिहारी** भाषा बिहार में, (viii) **राजस्थानी** भाषा राजस्थान में, (ix) **नेपाली** भाषा नेपाल और तिब्बत के सीमावर्ती क्षेत्रों में, (x) **पहाड़ी भाषा** उत्तराखण्ड में नैनीताल, टिहरी गढ़वाल, शिमला की पहाड़ियों, अल्मोड़ा जिलों, हिमाचल प्रदेश और पंजाब में, (xi) उत्तर-पश्चिमी भारत तथा पाकिस्तान में **सिन्धी, पश्तो, बलूची** भाषाएँ बोली जाती हैं। **कश्मीरी** भाषा कश्मीर में बोली जाती है।

आधुनिक भारतीय भाषाओं का वर्गीकरण

परिवार	उप-परिवार	शाखा/वर्ग	वाक् क्षेत्र
आस्ट्रिक (निषाद) 1.38%	आस्ट्रो-एशियाई	मॉन ख्मेर	मेघालय, निकोबार द्वीप समूह
		मुण्डा	पश्चिम बंगाल, बिहार, ओडिशा, असोम, मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र
	आस्ट्रो-नेसियन		भारत के बाहर
द्रविड़ 20%		दक्षिण द्रविड़	तमिलनाडु, कर्नाटक, केरल
		मध्य द्रविड़	आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश, ओडिशा, महाराष्ट्र
		उत्तर द्रविड़	बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, मध्य प्रदेश
चीनी-तिब्बती (किरात) 0.85%	तिब्बती-म्यांमारी	तिब्बती हिमालयी	जम्मू और कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, सिक्किम
		उत्तरी असोमिया	अरुणाचल प्रदेश
	सियामी-चीनी	असोमिया म्यांमारी	असोम, नागालैण्ड, मणिपुर, मिजोरम, त्रिपुरा, मेघालय
भारतीय-यूरोपीय (आर्य) 73%	इण्डो-आर्य	इरानी (फारसी)	भारत से बाहर
		दरदी	जम्मू और कश्मीर
		भारतीय आर्य	जम्मू और कश्मीर, पंजाब, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश, राजस्थान, हरियाणा, मध्य प्रदेश, बिहार, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असोम, गुजरात, महाराष्ट्र, गोवा।

(2) **द्रविड़ भाषाएँ** (Dravidian)—द्रविड़ भाषा भारत की प्राचीन भाषाओं में गिनी जाती है। यह भाषा प्रायद्वीपीय भारत के लगभग 20 प्रतिशत लोगों द्वारा बोली जाती है। मुख्य द्रविड़ भाषा तमिलनाडु, कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश तथा दक्षिण महाराष्ट्र में बोली जाती है। इसकी मुख्य शाखाएँ निम्नलिखित हैं—(i) **तमिल** भाषा सबसे पुरानी, धनी और सुसंगठित भाषा है जो विशेषकर तमिलनाडु राज्य में बोली जाती है। (ii) **मलयालम** (या केरल) भाषा तमिल भाषा की एक शाखा है। यह मालाबार तट पर बोली जाती है। (iii) **तेलुगु** (या आन्ध्र) भाषा समुद्र तट पर तमिलनाडु से लेकर ओडिशा के दक्षिण तट तक बोली जाती है। (iv) **कन्नड़** (या कर्नाटक) भाषा कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश तथा महाराष्ट्र में बोली जाती है।

पूर्वी भारत में तीन द्रविड़ भाषाओं का प्रचलन है झारखण्ड में **ओरन**, राजमहल पहाड़ियों के दक्षिण में **माल्टी** और ओडिशा में **कान्ध** या **कुई** भाषा। मध्यवर्ती भारत में गोंड भाषा मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और आन्ध्र प्रदेश में बोली जाती है।

(3) **आस्ट्रिक** (Austric) (या आदिवासियों की) भाषाओं का विकास नहीं हुआ है। ये मुख्यत: भारत के मध्यवर्ती और पूर्वी भागों में आदिवासियों द्वारा ही बोली जाती हैं। इस प्रकार भाषाओं के अन्तर्गत (i) **निकोबारी** निकोबार द्वीप में, (ii) **संथाली** झारखण्ड, ओडिशा व पश्चिम बंगाल की भाषाएँ आती हैं।

(4) **तिब्बती-चीनी भाषाएँ** (Tibeto-Chinese) उत्तर-पूर्वी पहाड़ी भागों में मंगोलियन लोगों के वंशजों द्वारा बोली जाती हैं। ये भाषाएँ दक्षिणी हिमालय के ढालों से लेकर उत्तर-पश्चिमी, पश्चिम बंगाल और असोम तक बोली जाती हैं। इनके बोलने वालों की संख्या बहुत ही कम है।

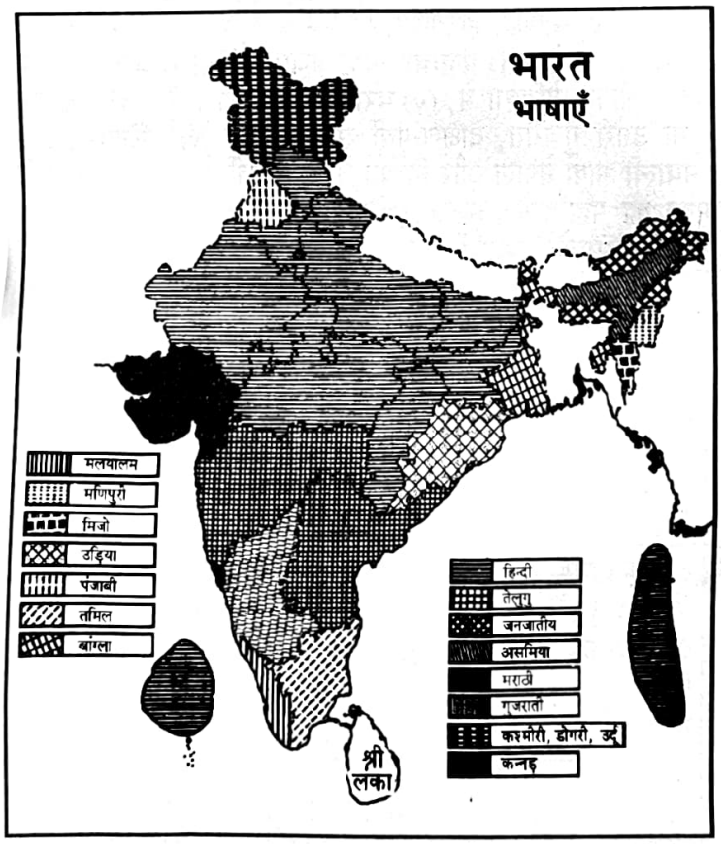

सम्पूर्ण भारत में 71 प्रतिशत व्यक्ति भारत आर्य भाषा बोलते हैं; 20 प्रतिशत द्रविड़ भाषा, 1.38 प्रतिशत कोल भाषा और केवल 0.85 प्रतिशत व्यक्ति चीनी मिश्रित भाषाओं का प्रयोग करते हैं।

भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में अंग्रेजी के अतिरिक्त 15 भाषाओं को रखा गया है। 20 अगस्त, 1992 के संसदीय कानून के अनुसार नेपाली, कोंकणी एवं मणिपुरी भाषाओं को सम्मिलित किया गया। तदुपरान्त 4 अन्य भाषाएँ भी सम्मिलित की गयीं। इस प्रकार अब अंग्रेजी के अतिरिक्त अन्य 22 भाषाएँ हैं। ये भाषाएँ निम्नांकित हैं—

(1) हिन्दी, (2) बांग्ला, (3) तेलुगु, (4) मराठी, (5) तमिल, (6) उर्दू, (7) गुजराती, (8) कन्नड़, (9) मलयालम, (10) उड़िया, (11) पंजाबी, (12) असमिया, (13) सिन्धी, (14) नेपाली, (15) कोंकणी, (16) मणिपुरी, (17) कश्मीरी, (18) संस्कृत, (19) बोडो, (20) सन्थाली, (21) मैथिली व (22) डोगरी। वर्तमान में संविधान में 22 भाषाएँ मान्य हैं।

भारत के राज्यों में 23 अनुसूचित भाषाओं का प्रचलन है। प्रत्येक राज्य में अपनी भाषा बोली जाती है। हिन्दी को राष्ट्र भाषा का सम्मान मिला है। इसका दक्षिण भारतीय राज्य विरोध करते रहे हैं।

धार्मिक संघटन
(RELIGIOUS COMPOSITION)

धर्म एक महत्वपूर्ण कारक है जो प्रत्येक समाज में देखा जाता है। समाज के क्रमिक विकास के रूप में ही धर्म का भी क्रमिक विकास हुआ है। **स्वामी विवेकानन्द** के अनुसार, "**धर्म वह है जो मानव को इस संसार और परलोक में आनन्द की खोज के लिए प्रेरित करता है।**"

धर्म का प्रयोग अनेक अर्थों में किया जाता है। इसका प्रयोग धार्मिक कृत्यों, पूजा-अर्चना विधियों, नैतिक नियमों और आचरण, प्राकृतिक नियमों और धार्मिक विश्वासों तथा विचारों के लिए किया जाता है। साधारणत: धर्म शब्द का प्रयोग किसी विशेष ईश्वरीय पंथ, सम्प्रदाय अथवा मत के लिए होता है, यथा—हिन्दू धर्म, इस्लाम धर्म, ईसाई धर्म आदि।

भारत में जातियों और भाषाओं की विभिन्नता के साथ-साथ विभिन्न धर्म भी मिलते हैं। यहाँ के लोगों का जीवन बहुत कुछ धर्म द्वारा प्रभावित होता है। वस्तुत: उनका पालन शिक्षा, रीति-रिवाज, भोजन व्यवस्था, जीवन-स्थान तथा सामाजिक वातावरण आदि सभी धर्म द्वारा ही निर्धारित होता है। धर्म की दृष्टि से भारतीय जनसंख्या का वितरण निम्नांकित प्रकार है—

(1) **हिन्दू धर्म** (Hindu) देश का सबसे प्रमुख धर्म है। **विश्व हिन्दू परिषद्** के अनुसार, "हिन्दू वह है जो भारत में उत्पन्न किसी भी धर्म को मानता है तथा जो भारत में भारतीय माता-पिता की सन्तान है।" इस मत के अनुसार सनातनी, आर्य समाजी, जैन, सिख, बौद्ध, ब्रह्म आदि सभी हिन्दू कहे जा सकते हैं। यह सत्य ही कहा गया है कि भाषा भारतीय लोगों को भौगोलिक समुदाय में बाँटती है, धर्म उन्हें समान्तर पंथों में बाँटता है। हिन्दू धर्म की तीन विशेषताएँ हैं—

(i) एक सर्वोच्च सत्ता (परमेश्वर) तथा अनेक छोटे देवताओं में प्रत्येक हिन्दू धर्मावलम्बी पूर्ण आस्था रखता है। (ii) इसकी प्रवृत्ति सहनशीलता की है तथा कोई भी हिन्दू देवता-विशेष की आराधना कर सकता है, उस पर कोई प्रतिबन्ध नहीं। (iii) यह कर्म, पुनर्जन्म और मृत्यु के बाद मोक्ष मिलने में विश्वास रखता है। गीता की यह सूक्ति **"कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन:"** (Action is thy duty, Reward is not thy concern) सभी भारतीयों में मान्यता प्राप्त है।

हिन्दू धर्म की अपनी एक विशेष सामाजिक व्यवस्था होती है जिसके मुख्य तत्व जाति, समुदाय, संयुक्त परिवार प्रणाली, बाल विवाह की प्रथा, सार्वभौमिक विवाह प्रथा आदि हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार हिन्दुओं की संख्या 96.62 करोड़ है।

(2) **मुस्लिम** (Muslims) या **इस्लाम धर्म** का जन्म अरब देश में हुआ, मोहम्मद साहब इसके प्रथम पैगम्बर माने जाते हैं किन्तु भारत में 12वीं शताब्दी से फैला। अत: इसका विस्तार उत्तर-पश्चिमी भारत तक ही सीमित रहा, किन्तु शनै:-शनै: यह गंगा की घाटी में फैल गया तथा पश्चिम बंगाल में इसने अपनी जड़ें जमा लीं। भारत प्रायद्वीप में यह अधिक नहीं फैल सका और इसलिए वहाँ 10-15% से अधिक मुस्लिम नहीं हैं। यहाँ मुस्लिम अधिकतर पश्चिमी भागों में ही पाये जाते हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इनकी संख्या 17.22 करोड़ है।

(3) **सीरिया के ईसाई** (Christians)—ईसाई धर्म के प्रवर्तक ईसा मसीह थे। भारत में जो ईसाई प्रथम शताब्दी के प्रारम्भिक काल में ट्रावनकोर-कोच्चि में आ बसे थे, अन्य मिशनरी ईसाइयों से भिन्न हैं। **रोमन, कैथोलिक ऐंग्लिकन** तथा **बैपटिस्ट** ईसाइयों की संख्या ही भारत में अधिक है। ईसाई धर्म का विस्तार भारत में पहाड़ी जातियों तथा हिन्दुओं की निम्न जातियों में अधिक हो गया है। इस समय ईसाइयों का केन्द्रीकरण विशेषत: केरल, गोवा, दमन-दीव, पुडुचेरी, नागालैण्ड, तमिलनाडु, आन्ध्र प्रदेश, मध्य प्रदेश और महाराष्ट्र में ही अधिक है। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इनकी संख्या 2.78 करोड़ है।

(4) **सिख** (Sikhs)—इस धर्म का जन्म 16वीं शताब्दी में वैष्णव धर्म से पृथक् होकर हुआ। इस धर्म के प्रवर्तक गुरुनानक थे। यह धर्म प्राचीन हिन्दू धर्म को एक शुद्ध धर्म के रूप में अपनाने का ही प्रयास था जिसने बहु-देवों, मूर्ति-पूजा, जाति प्रथा, तीर्थ यात्रा और पुनर्जन्म का जोरदार खण्डन किया। मुसलमानों की राजनीतिक क्रूरता तथा हिन्दुओं की सामाजिक क्रूरता के फलस्वरूप ही सिखों ने एक शान्तिमय पथ के स्थान पर एक सैनिक धर्म का अवलम्बन किया। इस धर्म के दो मुख्य सिद्धान्त हैं—लम्बे बाल रखना तथा धूम्रपान न करना। इनके पास सदैव कच्छ, कृपाण, कंघी, कड़ा और केश रहते हैं जिनसे इन्हें अन्य धर्मावलम्बियों के बीच सरलतापूर्वक पहचाना जा सकता है। आरम्भ में ये मुख्यत: काँगड़ा, पटियाला आदि बिन्दुओं को मिलाने वाले 30,000 वर्ग किलोमीटर त्रिभुजाकार प्रदेश में ही केन्द्रित थे, किन्तु अब पंजाब, हरियाणा, उत्तरी गंगानगर (राजस्थान एवं दिल्ली व चण्डीगढ़) में अधिक फैले हैं। ये बड़े हट्टे-कट्टे होते हैं जिससे भारतीय सेना में बड़ी संख्या में मिलते हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार इनकी संख्या 2.08 करोड़ है

(5) **जैन** (Jains)—इस धर्म के प्रतिपादक महावीर स्वामी थे। यह हिन्दू धर्म की ही एक शाखा मानी जाती है। यद्यपि जैन धर्मावलम्बी हिन्दू धर्म के सिद्धान्तों को मानते हैं किन्तु वह जीवों के प्रति अहिंसा पर अधिक जोर देते हैं। ये अधिकांशत: व्यापारी और धनवान होते हैं तथा भारत में दूर-दूर तक फैले हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार इनकी संख्या 44.52 लाख थी।

(6) **बौद्ध** (Buddhist)—बौद्ध धर्म भी हिन्दू धर्म की ही एक शाखा है। इसे गौतम बुद्ध ने छठी शताब्दी ई. पू. में चलाया था। इसका सबसे अधिक प्रचार गंगा की घाटी में ही हुआ। यह धर्म नीति पर अवलम्बित था। यद्यपि भारत में यह धर्म 10वीं शताब्दी के बाद से लोप हो गया किन्तु आज भी महाराष्ट्र, जम्मू-कश्मीर, त्रिपुरा, उत्तर प्रदेश, पश्चिम बंगाल, असोम तथा सिक्किम के पहाड़ी भागों में इनके अनुयायी मिलते हैं। वर्ष 2011 की जनगणना के अनुसार इनकी संख्या 84.43 लाख है।

(7) **पारसी** (Zoroastrian)—इस धर्म के प्रवर्तक जरथुस्त्र थे। यह लोग भारत में 7वीं शताब्दी में फारस के मुस्लिम धर्म की क्रूरता से बचने के लिए आये और भारत के पश्चिमी भागों में बस गये। ये लोग सूर्य और अग्नि की पूजा करते हैं। यह अधिकांशत: व्यापारी और उद्योगी हैं। इनका सबसे अधिक केन्द्रीकरण मुम्बई नगर में है। 2001 की जनगणना के अनुसार इनकी संख्या 69,740 है।

उपर्युक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि भारत के निवासियों का सम्बन्ध किसी-न-किसी धर्म से है। अधिकांश धर्मों का सम्बन्ध तीर्थ स्थानों से बताया जाता है। उदाहरणार्थ—काशी, हिन्दू धर्म और संस्कृति से सम्बन्धित है। यहाँ अनेक हिन्दू मन्दिर हैं। हिन्दुओं के लिए गंगा सबसे पवित्र नदी है जिसके तट पर मृत्यु अथवा अन्त्येष्टि क्रिया से आत्मा को शान्ति प्राप्त होना माना जाता है। अलीगढ़, हैदराबाद और देवबन्द के विश्वविद्यालय मुस्लिम संस्कृति के केन्द्र हैं। सिखों के पंजाब में ननकाना साहिब और अमृतसर तथा बिहार में पटना साहिब; जैनियों के राजस्थान (महावीर जी, दिलवाड़ा, रणकपुर, ऋषभदेव); गुजरात (पालीताना, गिरनार); बिहार (सम्मेद शिखर) तथा पारसियों के मुम्बई नगर में सांस्कृतिक केन्द्र हैं। बौद्ध गया (बिहार), सारनाथ (उत्तर प्रदेश), सांची (मध्य प्रदेश) में बौद्धों के विहार हैं। बद्रीनाथ, केदारनाथ, जगन्नाथपुरी, द्वारिका, रामेश्वरम्, वाराणसी, कांजीवरम् सभी हिन्दुओं के लिए पूज्य स्थान हैं।

धर्मानुसार भारत की जनसंख्या (2001)

धर्म	**जनसंख्या** (2011)	**देश की जनसंख्या** (2011) (प्रतिशत में)	**लिंगानुपात** (2001) (प्रति हजार पुरुषों पर महिलाओं की संख्या)	**साक्षरता दर** (2001) (प्रतिशत)	**महिला साक्षरता दर** (2001) (प्रतिशत)
हिन्दू	96.62 करोड़	79.8	931	65.1	53.2
मुस्लिम	17.22 करोड़	14.2	936	59.1	50.1
ईसाई	2.78 करोड़	2.3	1,009	80.3	76.2
सिख	2.08 करोड़	1.7	893	69.4	63.1
बौद्ध	79.38 लाख	0.9	953	72.7	61.7
जैन	44.52 लाख	0.40	940	94.1	90.6
अन्य	28.67 करोड़	0.6	—	47.0	33.2

वर्ष 2011 की जनगणना के धर्म पर आधारित आँकड़ों के आधार पर हिन्दू जनसंख्या 96.62 करोड़ (कुल जनसंख्या का 78.35 प्रतिशत) व मुस्लिम जनसंख्या 17.22 करोड़ (कुल जनसंख्या का 14.2 प्रतिशत) है। तीसरे स्थान पर ईसाइयों की जनसंख्या 2.78 करोड़, चौथे स्थान पर सिख 2.08 करोड़, पाँचवें स्थान पर बौद्ध 79.38 लाख तथा छठे स्थान पर जैन 44.52 लाख हैं। अन्य धर्मों की कुल जनसंख्या 28.67 लाख पायी गयी।